स्व. बालकवि बैरागी ने लिखा था: मैं अपनी गंध नहीं बेचूंगा

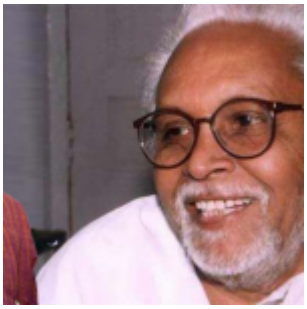

'चाहे सभी सुमन बिक जाएं, चाहे ये उपवन बिक जाएं, चाहे सौ फागुन बिक जाएं, पर मैं अपनी गंध नहीं बेचूंगा।' जैसी पक्तियां लिखने वाले बालकवि बैरागी जी रविवार की शाम इस दुनिया से रुखसत हो गए।
हमारे बहुत चहेते बंधु विष्णु बैरागी उनके छोटे भाई हैं और यह उनके परिवार के लिए ही नहीं बल्कि साहित्य और सिनेमा से जुड़े लोगों के लिए भी दुख की घड़ी है।

बहुत पहले दूरदर्शन पर मैंने फ़िल्म 'रेशमा और शेरा' देखी थी। इसमें अमिताभ बच्चन एक गूंगे नौजवान की भूमिका में थे। इसका एक गीत उन्हीं दिनों मन में बैठ गया था। इधर कुछ सालों में इसे कई बार सुना। कई म्यूज़िक डायरेक्टर से भी इस गीत का ज़िक्र किया कि अब इस तरह की धुनें नहीं रची जातीं। यह राग मांड में है और आप जानते हैं कि यह कौन सा गीत है।

तू चंदा मैं चांदनी, तू तरुवर मैं शाख रे
तू बादल मैं बिजुरी, तू पंछी मैं पात रे

राग मांड वही है, जिसमें राजस्थान का मशहूर लोकगीत 'केसरिया बालम आओ नी, पधारो म्हारो देश' गाया जाता है। फ़िल्मों में भी इसके कई प्रयोग हुए हैं। मजरूह सुल्तानपुरी का लिखा पाकीज़ा का गीत 'चांदनी रात बड़ी देर के बाद आयी है, ये मुलाक़ात बड़ी देर के बाद आयी है ; आज की रात वो आये हैं बड़ी देर के बाद, आज की रात बड़ी देर के बाद आयी है... ठाड़े रहियो ओ बांके यार रे, ठाड़े रहियो' में राग मिश्र खमाज के साथ मांड भी मिला हुआ है। और भी कई गीत हैं इस राग में, लेकिन 'तू चंदा मैं चांदनी' का जवाब नहीं है। यह गीत बालकवि बैरागी ने लिखा था।

बालकवि बैरागी ने हिंदी फ़िल्मों के लिए दो गीत लिखे। 1971 में रेशमा और शेरा का यह मशहूर गीत और दूसरा 1985 में आयी फ़िल्म 'अनकही' का एक गीत, 'मुझको भी राधा बना ले नंदलाल'। इस फ़िल्म में अमोल पालेकर, दीप्ति नवल और श्रीराम लागू थे।

बालकवि बैरागी इसलिए बड़े हैं, क्योंकि वे उन कुछ गीतकारों की टोली में थे, जिन्हें फ़िल्मों की चमक-दमक से ज़्यादा साहित्य में सुख मिलता था। गोपाल दास नीरज भी अलीगढ़ लौट गये। गोपाल सिंह नेपाली भी मुंबई में नहीं टिके। पंडित नरेंद्र शर्मा ने भी बहुत थोड़े से गाने लिखे। संतोष आनंद आजकल

दिल्ली में एकाकी जीवन गुज़ार रहे हैं। ऐसे कई गीतकार, जिन्होंने हिंदी फ़िल्मों को बेहद खूबसूरत गाने दिये, लेकिन जब फ़िल्मों में शब्दों को किनारा किया जाने लगा, वे चुपचाप बंद गली के अपने आख़िरी मकान में जाकर क़ैद हो गये।

एक और बात, मैंने बालकवि बैरागी को सामने से सुना है। ग़ालिब के मोहल्ले बल्लीमारान (चांदनी चौक, दिल्ली) में एक कवि सम्मेलन था। उसमें पाकिस्तान से अहमद फ़राज़ भी आये थे, जिनकी ग़ज़ल 'रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ' बहुत मक़बूल है। उस वक़्त मोबाइल तो था, लेकिन सेल्फ़ी का दौर शुरू नहीं हुआ था। वरना हमारे पास इन हस्तियों के साथ सेल्फ़ी होती।

कल दोपहर बालकवि बैरागी ने इस जीवन का साथ छोड़ दिया। इसकी सूचना विष्णु बैरागी जी से मिली। हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

(साभार : अविनाश दास के फेसबुक वाल से)

ये भी पढ़े

मुख्य मंत्री नाम भूल गए और 'कवि' से 'बाल कवि' बन गए बैरागी

संस्मरण: बालकवि बैरागी : वे कवियों में राजनीतिज्ञ और राजनेताओं में कवि थे